सम्पादकीय

सतर्क रहें सभी

हमारे देश में कोरोना वायरस से जुड़े आंकड़ों से दो मुख्य बातें निकलकर आ रही हैं-संक्रमण की दर लगातार बढ़ती जा रही है, पर संक्रमितों की मृत्यु दर में गिरावट हो रही है। संक्रमितों की संख्या बढ़ने का सीधा अर्थ है कि इस घातक वायरस की उपस्थिति व्यापक स्तर पर है। इस संबंध में यह भी रेखांकित करना आवश्यक है कि ठोस प्रयासों के बावजूद अभी भी जांच का अनुपात संतोषजनक नहीं है यानी अगर अधिक तेज गति से जांच हो, संख्या में और भी बढ़ोतरी हो सकती है। निश्चित रूप से मृत्यु दर में कमी यह इंगित कर रही है कि अस्पतालों व डॉक्टरों की कोशिशों से अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। संक्रमण से मुक्त होने वालों की संख्या भी लगभग 63 फीसदी है। ये तथ्य उत्साहवर्द्धक हैं, किंतु अभी सबसे बड़ी प्राथमिकता संक्रमण को रोकने की है क्योंकि यदि बड़ी संख्या में लोग वायरस की चपेट में आते रहेंगे, तो गंभीर रूप से बीमारों और मृतकों की दर कभी भी बढ़ सकती है । इसी वजह से देश के अनेक हिस्सों में पूरा या आंशिक लॉकडाउन लगाने की नौबत आयी है। देश में टेस्ट बढ़ने से संक्रमण की दर अवश्य घट रही है और मरीजों के ठीक होने की दर में भी वृद्धि हुई है। शुक्रवार को नये मामलों में रिकार्ड वृद्धि हुई है। पिछले 24 घण्टे में 34,956 नये मामले आये और 687 लोगों की मृत्यु हुई। संक्रमितों का आंकड़ा बढ़कर दस लाख के पार हो गया है। यह स्थिति चिन्ताजनक है। लोगों को अपने बचाव के लिए स्वयं सभी स्तरों पर सक्रिय होना पड़ेगा। मामूली लापरवाही प्राणघातक हो सकती है। दुर्भाग्य की बात यह है कि देश की जनता अभी तक इसे गम्भीरता से नहीं ले रही है, जिसका दुष्परिणाम सामने आ रहा है। प्रतिदिन आंकड़ों में वृद्धि हो रही है। सरकार सख्ती अवश्य कर रही है लेकिन आम जनता को भी अपने प्रति सख्त होना पड़ेगा। कोरोना का टीका विकसित करने की दिशा में अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और भारत सहित कई देश पूरी तरह से सक्रिय हैं। अच्छे परिणाम की सम्भावनाएं प्रबल हैं लेकिन व्यावहारिक धरातल पर इसे लाने में समय लग सकता है। नये खतरे जो मंडरा रहे हैं उनके प्रति भी लोगों को काफी सजग रहना पड़ेगा। कोरोना महामारी के सन्दर्भ में कई राहतकारी खबरों के बीच एक बड़ी गम्भीर चिन्ता का विषय भी सामने आया है, जिस पर पूरे विश्व को विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही कोरोना के विरुद्ध जंग की रणनीति भी बदलने पर विचार करना होगा जिससे कि इसकी भयावहता पर अंकुश लगाया जा सके। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि आगामी ढाई महीने अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। यदि सितम्बर तक कोरोना पर काबू नहीं पाया गया तो पूरा विश्व स्पेनिश फ्लू की चपेट में आ जायगा जो मानव के जीवन पर बड़ा संकट होगा। सितम्बर-अक्तूबर में तेजी पकड़ने के साथ जनवरी-फरवरी में यह दोबारा चरम पर पहुंच सकता है। वर्ष 1918-19 में पांच करोड़ से अधिक लोग स्पेनिश फ्लू से अपनी जान गंवा चुके हैं। ब्रिटेन की एकेडमी आफ मेडिकल साइसेंस ने कहा है कि तापमान में कमी आने के साथ सर्दी शुरू होते ही अस्थमा या अन्य श्वसन रोग, हृदय रोग और पक्षाघात जैसी समस्याएं और गम्भीर हो सकती हैं। इंफ्लूएंजा और तेजी से फैलेगा जिससे अस्पतालों और स्वास्थ्य कर्मियों पर कई गुना दबाव बढ़ेगा। घरों के अन्तर तेजी से वायरस फैलेगा जिसकी ट्रेसिंग में भी दिक्कतें आएंगी। सर्दियों में मरीजों की संख्या में दोसे तीन गुना वृद्धि हो सकती है जिसे नियंत्रित करना काफी कठिन होगा। छींकने और खांसने से वायरस का प्रसार तेज होगा । कोरोना और साधारण खांसी-जुकाम में अन्तर करना कठिन हो जायगा। ऐसे में हमें यह बार-बार याद रखने की आवश्यकता है कि सतर्कता एवं सावधानी इस वायरस के विरुद्ध हमारे सबसे कारगर हथियार हैं। सीमित संसाधनों के कारण बड़ी आबादी की जांच कर पाना व्यावहारिक नहीं है। अस्पतालों में सभी संक्रमितों का उपचार हो पाना भी संभव नहीं है । इस स्थिति में निर्देशों का पालन करते हुए मामूली लक्षणों का पता चलते ही समुचित सलाह लेकर स्वयं को स्वस्थ करने पर ध्यान देना चाहिए। सरकार, समाज और नागरिकों को एकजुट होकर कोरोना का सामना करना है।

सराहनीय सोच

कोरोना संकटकाल में देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दिशा में अपना योगदान और सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने के लिए विश्व की प्रमुख कम्पनी गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) पिचाई सुन्दरराजन की भारत में 75 हजार करोड़ रुपये के निवेश की घोषणा अत्यन्त ही सराहनीय है। कम्पनी यह धनराशि गूगल फार इण्डिया डिजिटलीकरण कोष के माध्यमसे आगामी पांच से सात वर्षों में कई चरणों में निवेश करेगी। इसके तहत गूगल भारत की छोटी-बड़ी कम्पनियों में हिस्सेदारी खरीदने या उसके साथ साझेदारी कर सकती है। इसके अतिरिक्त भारत में डिजिटल इन्फ्रा और डिजिटल इकोसिस्टम तैयार करने में भी धन का निवेश किया जायगा। तमिलनाडु के मदुरै में जन्मे और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खडग़पुर से इंजीनियरिंग स्नातक 48 वर्षीय पिचाई सुन्दरराजन ने, जो सुन्दर पिचाई के नाम से विख्यात हैं, सोमवार को वर्चुअल माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ वार्ता की और कहा कि हमारा निवेश भारत के डिजिटलीकरण के चार प्रमुख बातों पर केन्द्रित होगा। इनमें हर भारतीय तक उसकी भाषा में सस्ती पहुंच और सूचनाएं उपलब्ध कराना, आवश्यकता के अनुसार नये उत्पाद और सेवाओं का सृजन करना, कारोबारियों को डिजिटल परिवर्तन के लिए सशक्त करना और स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कृषि जैसे क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी लाभ पहुंचाना सम्मिलित है। प्रधानमंत्री मोदी ने सुन्दर पिचाई के इन प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त की। वस्तुतः भारत और देशवासियों के लिए सुन्दर पिचाई का यह महत्वपूर्ण योगदान है। इसके लिए भारत के प्रति उनकी सकारात्मक सोच और नैतिक दायित्व का बोध गौरव का विषय है। जिस देश की मिट्टी पर उन्होंने जन्म लिया और कम उम्रमें ही विश्व की एक बड़ी हस्ती के रूप में प्रतिष्ठित हुए, उससे भारत का गौरव बढ़ा है। भारत में जन्मे ऐसे अनेक लोग है, जो विश्व के अनेक देशो में ऊंचे पदों पर आसीन हैं। सुन्दर पिचाई का यह योगदान और राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण तथा सेवा भावना उन लोगों के लिए भी प्रेरक और अनुकरणीय है। ऐसे लोगों की लम्बी सूची है, जिनके लिए भारत में निवेश एक बड़ा अवसर साबित हो सकता है। भारत आज पूरे विश्व में प्रौद्योगिकी कम्पनियों के लिए अनुकूल और सुरक्षित निवेश स्थल है, जहां वे अपना कारोबार शुरू कर सकती हैं। उसके लिए उन्हें आगे आने की जरूरत है। सुन्दर पिचाई की घोषणा से उन्हें सीख लेने की आवश्यकता है।

आस्था

मानसिक शांति और ऊर्जा प्रदान करता है प्रदोष व्रत

भगवान शिव की कृपा पाने के लिए प्रदोष व्रत अवश्य करना चाहिए। शनि प्रदोष व्रत को प्रदोष व्रतों में महत्वपूर्ण माना जाता है। जो प्रदोष व्रत शनिवार के दिन आता है उसे शनि प्रदोष या शनि त्रयोदशी कहा जाता है। मान्यता है कि प्रदोष काल में भगवान शिव साक्षात् शिवलिंग में प्रकट होते हैं। इसीलिए प्रदोष काल में भगवान शिव की आराधना का विशेष महत्व है। शनि प्रदोष व्रत रखने से भगवान शिव का आशीष एवं शनिदेव की कृपा प्राप्त होती है। जिन पर शनि की साढ़ेसाती चल रही हो उन्हें यह व्रत अवश्य रखना चाहिए। शनि प्रदोष व्रत के दिन शनिदेव और भगवान शिव की पूजा करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। यह व्रत संतान प्राप्ति में आ रही बाधाओं को दूर करता है। प्रदोष व्रत से चंद्र दोष दूर होते हैं और मानसिक शांति मिलती है। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से शरीर रोगमुक्त होता है और ऊर्जा का अनुभव होता है। शनि प्रदोष व्रत में शाम को हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य करें। शनि प्रदोष व्रत में व्रती को पूरे दिन निराहार रहना चाहिए। सूर्यास्त के समय श्वेत वस्त्र धारण कर भगवान शिव और शनिदेव की पूजा करनी चाहिए। पीपल के पेड़ पर जल अर्पित करना चाहिए। शनि स्तोत्र और शनि चालीसा का पाठ करना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए नेल्सन मंडेला के विचारों की प्रासंगिकता

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

18 जुलाई को पूरी दुनिया में 'अंतर्राष्ट्रीय नेल्सन मंडेला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा,'अतिप्रिय मदीबा के उत्कृष्ट कार्य, आदर्श और सिद्धांत हमें निरंतर प्रेरित करते रहते हैं। उन्होंने शांति, समानता और सेवा भाव की जीत को सही मायनों में अभिव्यक्त किया।' आज इस स्तंभ के माध्यम से मैं शिक्षा के क्षेत्र में उनके अनमोल विचारों और राय को साझा कर रहा हूं। इसके तहत उनके अनमोल विचारों को भारतीय शिक्षा प्रणाली के गुणात्मक विकास की व्यापक गुंजाइश और संभावनाओं से जोड़ने का प्रयास किया गया है। मंडेला ने अपनी आत्मकथा 'लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम' में बताया है कि किस तरह से शिक्षा ने उनके जीवन के विभिन्न दौर को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। जेल में रहने के बावजूद उन्होंने पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से अपनी कानूनी शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा के विषय में मंडेला का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न सदैव 'शिक्षा के उद्देश्य' से संबंधित होता था। उनकी राय यह थी कि शिक्षा बड़ी अनमोल है क्योंकि इससे कई उद्देश्यों की पूर्ति होती है। व्यक्तिगत विकास के साधन के साथ-साथ अवसर की समानता के एक उपयुक्त वाहक या साधन के रूप में शिक्षा पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने यह राय व्यक्त की थी-'शिक्षा व्यक्तिगत विकास का सर्वोत्तम इंजन है। यह शिक्षा ही है जिसके माध्यम से किसान की बेटी डॉक्टर बन सकती है, खदान कर्मचारी का बेटा खदान का प्रमुख बन सकता है, खेतिहर मजदूर का बेटा एक महान राष्ट्र का राष्ट्रपति बन सकता है।' इस प्रकार उनका यह स्पष्ट मानना था कि शिक्षा में किसी भी व्यक्ति को 'सामाजिक, आर्थिक और दार्शनिक रूप से' बंधनों से मुक्त करने की अपार क्षमता है। मदीबा की यह स्पष्ट राय थी कि शिक्षा केवल औपचारिक संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। उनके ही शब्दों में-''संकीर्ण सोच वाले व्यक्ति को यह समझाना कठिन है कि 'शिक्षित' होने का मतलब यह नहीं है कि संबंधित व्यक्ति साक्षर हो और उसके पास बीए की डिग्री हो। सच तो यह है कि एक अनपढ़ आदमी ऊंची डिग्री पाने वाले किसी व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक 'शिक्षित' मतदाता हो सकता है।'' उनके उत्कृष्ट विचार भारत की नई शिक्षा नीति के मसौदे में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। इस नीति में किसी व्यक्ति को अपने कार्य-क्षेत्र (फील्ड) में विशेषज्ञों से प्राप्त विशिष्ट ज्ञान के मूल्य के साथ-साथ कौशल को भी सहज रूप से मान्यता दी गई है, भले ही उसके पास कोई प्रोफेशनल डिग्री न हो। नीति में यह बात रेखांकित की गई है कि विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय विशेषज्ञों या जानकारों जैसे कि बढ़ई, राजमिस्त्री, इत्यादि को कौशल शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूलों में औपचारिक रूप से बुलाया जाएगा। यही नहीं, इससे भी कई और कदम आगे बढ़ते हुए नीति में यह भी कहा गया है कि उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की स्थानीय शिल्पकारों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों या जानकारों के साथ दस-दिवसीय इंटर्नशिप होगी। इसका उद्देश्य न केवल इन विशेषज्ञों या जानकारों से उनके विशिष्ट कौशल या ज्ञान को सीखना है, बल्कि समाज की प्रगति और विकास में इन स्वयं-निपुण विशेषज्ञों और कुशल व्यक्तियों के बहुमूल्य योगदान से विद्यार्थियों को अवगत कराना भी है।

मदीबा का यह स्पष्ट मानना था कि शिक्षा सशक्तिकरण और व्यापक बदलावों का एक अहम साधन है। हालांकि, इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए शिक्षा को प्रासंगिक बनाने की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा से संबंधित उनके प्रसिद्ध उद्धरणों में से एक यह है-'शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। शिक्षा को पूर्वाग्रह के दुश्मन के रूप में भी देखा जाता था। इसे ध्यान में रखते हुए मंडेला ने कहा, 'शिक्षा की ताकत उन कौशलों के विकास से भी काफी परे है जो हमें आर्थिक कामयाबी के लिए चाहिए। यह राष्ट्र निर्माण और सामंजस्य स्थापित करने में भी अहम योगदान दे सकती है।' नेल्सन मंडेला के अनमोल विचारों को प्रतिबिंबित करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय एक ऐसी नीति लेकर आ रहा है जिसमें इस बात की परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों का पाठ्यक्रम और अध्यापन निश्चित तौर पर विद्यार्थियों में मौलिक कर्तव्यों एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना, अपने देश के साथ जुड़ाव, और बदलती दुनिया में अपनी भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता विकसित करेगा। आधुनिक शिक्षा की राह पर आगे बढ़ते हुए हमें अपने सांस्कृतिक इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। मंडेला ने कहा था कि इंसान को अपने सांस्कृतिक इतिहास को जानने और समझने की जरूरत है, जैसे कि संगीत, कला, नृत्य और स्थानीय भाषा। उन्होंने माना था कि अपने निजी जीवन में उन्होंने सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपने देश और वहां के लोगों के बारे में बहुत कुछ सीखा। भारत का सदियों पुराना एक समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास है। हमारा मंत्रालय एक नई शिक्षा नीति लेकर आ रहा है। इस नीति का सपना, सीखने वालों में भारतीय होने का गहरा गौरव भरना है, केवल विचार के स्तर पर ही नहीं बल्कि मूल भावना, बुद्धि और कर्मों के स्तर पर भी। साथ ही उनमें ऐसे ज्ञान, कौशल, मूल्यों और रुचियों को विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास, जीवन और वैश्विक भलाई के लिए जिम्मेदारी भरी प्रतिबद्धता को समर्थन करते हों जिससे सच्चे अर्थों में उनमें एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित हो सके। मंडेला ने हमेशा अनुशासन, कड़ी मेहनत और शारीरिक तंदुरुस्ती पर जोर दिया और उन्होंने बड़ी ईमानदारी से अपने खुद के जीवन में इन चीजों का अभ्यास किया। उन्होंने कहा-मैंने पाया है कि जब मैं अच्छी शारीरिक स्थिति में था तब मैंने बेहतर काम किया और अधिक स्पष्ट रूप से सोच सका। और इसलिए कसरत मेरे जीवन के दृढ़ विषयों में से एक बन गई। जब वे छिपकर रहा करते थे उन अवधियों के दौरान भी उसी जगह पर जॉगिंग के लिए समय निकाल लेते थे। व्यायाम और शारीरिक तंदुरुस्ती न केवल निजी जीवन में उनके लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि वे उनके शैक्षिक दर्शन का भी एक अनिवार्य हिस्सा बन गए।

जब भारत सरकार ने नागरिकों के दैनिक जीवन में शारीरिक गतिविधि,खेल को बढ़ाने के लिए 29 अगस्त 2019 को 'फिट इंडिया मूवमेंट' की शुरुआत की तो उसने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को एक ही निरंतरता की तरह लेने की सदियों पुरानी भारतीय संस्कृति को दोहराया, जैसा कि मंडेला ने किया था। पूरे देश में '13 लाख' स्कूलों और 11 करोड़' छात्रों ने फिटनेस का संकल्प लिया। नई शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा और कौशल शिक्षा को शैक्षणिक पाठ्यक्रम (पाठ्येतर या सह-पाठ्यचर्या गतिविधि के रूप में नहीं) के अभिन्न अंग के रूप में बरतने को लेकर दृढ़ प्रतिबद्धता के जरिए सरकार इन क्षेत्रों की ओर ध्यान वापस लाएगी ताकि हर बच्चे के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके।कंप्यूटर साक्षरता पर मदीबा के विचारों को देखना बहुत प्रसन्न करने वाला है। वास्तव में वे विचार काफी आधुनिक थे। मंडेला ने शिक्षकों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि ग्रेड 1 से ही शिक्षार्थी कंप्यूटर में साक्षर हों। इस प्रकार वे चाहते थे कि आज के शिक्षार्थी समकालीन तकनीकी विकास के साथ तालमेल रखें।

आज की दुनिया में उनके विचार और भी ज्यादा प्रासंगिक तब हो गए हैं जब ज्यादातर शिक्षा मिश्रित ई-लर्निंग की ओर बढ़ रही है। भारत सरकार ने प्रधानमंत्री ई-विद्या को शुरू किया है ताकि दीक्षा (एक राष्ट्र-एक डिजिटल प्लेटफॉर्म), टीवी (एक कक्षा-एक चैनल), स्वयम, सामुदायिक रेडियो और सीबीएसई शिक्षा वाणी पॉडकास्ट और दिव्यांग बच्चों के लिए अध्ययन सामग्री आदि के माध्यम से शिक्षा तक एक बहु-मोडल पहुंच प्रदान की जा सके। ये सब सार्वजनिक दायरे में गुणवत्ता भरी ई-सामग्री की उपलब्धता का युग लेकर आएंगे और इस प्रकार प्रौद्योगिकी, शिक्षा में समानता का अग्रदूत बन जाएगी।नेल्सन मंडेला के विज़न में शिक्षा के लिए एक परिवर्तनकारी शक्ति है।

-(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री हैं)

कोरोना काल में शिक्षा क्षेत्र को भी उठाना पड़ा है अभूतपूर्व नुकसान

जुलाई का महीना आ चुका है। छात्रों के बोर्ड परीक्षा के परिणाम भी आने लगे हैं। लेकिन इस सवाल का कोई ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पा रहा है कि स्कूल कब खुलेंगे ? मई के महीने में लोगों को यह उम्मीद थी कि जुलाई में स्कूल खुल जाएँगे। लेकिन दिल्ली के शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने कह दिया है कि दिल्ली में सभी स्कूल, जुलाई के अंत तक बंद रहेंगे। स्कूलों को लेकर रणनीति बनाने के लिए कई राज्यों ने समिति का गठन किया है। इन समितियों के सदस्य शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण से जुड़े लोग हैं। यह समितियाँ स्कूल खुलने की संभावित तिथि से लेकर कोविड-19 के कारण स्कूलों में होने वाले बदलाव की रूपरेखा तैयार करेंगी। एनसीईआरटी, सीबीएससी भी अपने स्तर से नियमवाली के अनुसार स्कूलों को निर्देशित करेंगे। इस समय दुनिया के दूसरे देश क्या कर रहे हैं, उनसे हम सीख सकते हैं। जून के पहले हफ्ते में इंग्लैण्ड के कुछ प्राथमिक स्कूलों को खोला गया था। लेकिन डर्बी के एक स्कूल में कार्यरत सात सदस्य संक्रमित पाए गए और फिर स्कूल को कुछ दिनों के लिए बंद करना पड़ा। फ्रांस में भी पहले कुछ स्कूलों को खोला गया था लेकिन एक सप्ताह के भीतर ही सत्तर बच्चों के संक्रमित होने की खबर आई थी। इन दिनों वहां अभिभावक स्कूल आने से पहले छात्रों का तापमान लेते हैं। स्कूल आने पर दिन में दो बार छात्रों का तापमान परिक्षण होता है।

छात्रों की पढ़ाई में हुए नुकसान की भरपाई के लिए भी रणनीति बनानी होगी। इंग्लैण्ड में स्कूलों के बंद होने के दौरान %घर पर शिक्षा% का अनुभव बहुत उत्साहवर्धक नहीं रहा है। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के शिक्षा-संस्थान ने हाल में ही एक अध्ययन किया है। उनका निष्कर्ष है कि स्कूल बंदी के दौरान छात्रों ने घर पर रहते हुए औसतन दो से ढाई घंटे ही स्कूल का कार्य किया है। इंग्लैण्ड में छात्रों के पढ़ाई में हुए नुक्सान की भरपाई के लिए ट्यूशन के द्वारा छात्रों की मदद का प्रस्ताव है। लेकिन इसमें बहुत अड़चनें हैं क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में वहां ट्यूटर की उपलब्धता एक आसान काम नहीं होगा। किस छात्र को क्या अकादमिक सहयोग चाहिए, इसकी पहचान करना भी एक सरल कार्य नहीं है। दिल्ली सरकार ने स्कूल से लेकर मॉल खोलने के विकल्पों पर नागरिकों और अभिभावकों से राय मांगी थी। कुछ और राज्य सरकारों ने स्कूलों को लेकर अभिभावकों की राय जानने की कोशिश की है। बनारस में एक मान्यता प्राप्त निजी स्कूल के संचालक ने बताया कि मार्च के महीने से ही छात्रों ने आना और फीस देना बंद कर दिया है। ऐसे में स्कूलों के सामने यह संकट है कि वह अपने शिक्षकों को कैसे काम पर बुलाएं ? यदि वह ऑनलाइन शिक्षा का कोई प्रबंधन करते भी हैं तो छात्रों की फीस आएगी इसकी निश्चितता नहीं है। कुछ शहरों में अभिभावक कह रहे हैं कि जब स्कूल चले ही नहीं तो फीस कैसी ? स्कूलों के बंद होने से निजी स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों के सामने गंभीर आर्थिक संकट बना हुआ है। कुछ की नौकरी जाने का खतरा है।

स्कूल खुलने से पहले स्कूल को अपना मूल्यांकन करना होगा। तमिलनाडु की ही बात करें तो स्कूली शिक्षा में 13000 से अधिक निजी प्रबंधन वाले स्कूल हैं जिनमें लगभग 39 लाख छात्र नामांकित हैं। क्या यहाँ सभी निजी स्कूल, स्कूल खोलने से पहले संभावित जोखिम का आकलन कर पाएंगे ? छात्रों और शिक्षकों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी प्रबंध कर पाएंगे ? फीस न मिलने की स्थिति में आर्थिक दबाव, कम जगह की उपलब्धता और इंफ्रास्ट्रक्टर की सीमा के बीच यह एक कठिन कार्य होगा। अपने देश में सरकारी और निजी स्कूल दोनों को ही खुलने से पहले बहुत से बदलाव करने होंगे। सेनिटाइजर और मास्क का इंतजाम करना होगा। तापमान नापने के लिए डिजिटल थर्मामीटर रखना होगा। प्रत्येक स्कूल का जोखिम की दृष्टि से अवलोकन करने की ज़रूरत होगी। उसी के अनुसार स्कूल खोलने की योजना को क्रियान्वित करना होगा। कक्षा में बैठक प्रबंधन से लेकर मध्याहन भोजन तक के लिए नए मानक तय करने होंगे। स्कूल में भोजन-पानी के द्वारा संक्रमण न फैले इसका विशेष ध्यान रखना होगा। दिव्यांग छात्र कैसे स्कूल आएंगे, अगर ज़रूरी है तो उनके लिए विशेष प्रबंध करना होगा।

प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों के अधिकांश अभिभावक, बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं और वह स्कूल भेजने की जल्दी में नहीं हैं। बच्चों को स्कूल भेजने के लिए, वह तब तक तैयार नहीं होंगे जब तक, स्कूल में संक्रमण से बचाव के प्रभावी प्रबंध नहीं हो जाते हैं। स्कूल खुलने से पहले, स्कूली शिक्षा में कार्यरत समस्त लोगों को कोविड-19 के खतरे और बच्चों को इस संक्रमण से बचाव के उपायों पर प्रशिक्षित करना होगा। वैसे स्कूल जब भी खोलने का निर्णय हो, इसमें छात्रों और उनके अभिभावकों की राय ज़रूर ली जाए।

कांग्रेस से क्यों विमुख हो रहे युवा नेता,क्या आत्मचिंतन करेगी पार्टी?

सुरेश हिंदुस्थानी

गत दो लोकसभा चुनाव में शर्मनाक पराजय के बाद अभी तक के राजनीतिक इतिहास में अपने सबसे बड़े दुर्दिनों का सामना कर रही कांग्रेस पार्टी समूहों में विभाजित होकर अवनति के मार्ग पर बेलगाम बढ़ती जा रही है। यह समस्याएं उसकी खुद की देन हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में कांग्रेस की राजनीति में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। इसके पीछे बहुत सारे कारण हो सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण यह भी माना जा रहा है कि आज की कांग्रेस में स्पष्ट दिशा और स्पष्ट नीति का अभाव-सा पैदा हो गया है। उसके जिम्मेदार नेताओं को यह भी नहीं पता कि कौन-से मुद्दे पर राजनीति की जानी चाहिए और किस पर नहीं। इसी कारण कांग्रेस का जो स्वरूप दिखाई दे रहा है, वह अविश्वसनीयता के घेरे में समाता जा रहा है। कांग्रेस के प्रति इसी अविश्वास के कारण उसके युवा नेताओं को अपना राजनीतिक भविष्य अंधकारमय लगने लगा है। इसलिए कांग्रेस के युवा नेता अब कांग्रेस से ही किनारा करने की भूमिका में आते जा रहे हैं। कांग्रेस के अंदर जिस प्रकार की दुरूहता की स्थिति बनी है, उसके पीछे एक बड़ा कारण यह माना जा सकता है कि गत तीन दशक से कांग्रेस लगातार अवनति के मार्ग पर अग्रसित होती दिखाई दे रही है, ऐसी स्थिति में भविष्य में शिखर की राजनीति करने की महत्वाकांक्षा रखने वाले नेता सशंकित अपने सामने एक बड़ा प्रश्नचिह्न अंकित होते हुए देख रहे हैं। इसी कारण कांग्रेस का युवा वर्ग अपनी ही पार्टी से किनारा करने की मनःस्थिति की जाते हुए दिख रहे हैं। पहले मध्य प्रदेश में लंबे समय तक उपेक्षा का दंश भोगने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस को गहरा आघात दिया था, उसके कारण कांग्रेस को अपनी राज्य सत्ता से हाथ धोना पड़ा। अब लगभग वैसी ही स्थिति राजस्थान में प्रादुर्भित होती दिखाई दे रही है। राजस्थान की रेतीली राह पर अशोक गहलोत की गति फिसलन की अवस्था में है।

यह स्थिति जहां एक ओर कांग्रेस के वरिष्ठ नेतृत्व के प्रति अनास्था की धारणा को जन्म देने वाला कहा जा सकता है, वहीं यह भी प्रदर्शित कर रहा है कि राहुल गांधी युवाओं को आकर्षित करने में असफल साबित हुए हैं। इसमें उनकी अनियंत्रित बयानबाजी भी कारण है। हम जानते हैं कि कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने एक बार नहीं, बल्कि कई बार गलतबयानी की है, जिसमें वे माफी भी मांग चुके हैं। यह बात सही है कि झूठ के सहारे आम जनता को भ्रमित किया जा सकता है, लेकिन जब सत्य सामने आता है, तब उसकी कलई खुल जाती है। सबसे बड़ी विसंगति तो तब बनती है, जब अपने नेता के बयान को कांग्रेस के अन्य नेता समर्थन करने वाले अंदाज में निरर्थक रूप से पुष्ट करने का असफल प्रयास करते हैं। ऐसे प्रयासों से भले ही यह भ्रम पाल ले कि उसने केन्द्र सरकार को घेर लिया, लेकिन वास्तविकता यही है कि इसके भंवर में वह स्वयं ही फंसी नजर आती है।

पिछले दो लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की जो राजनीतिक स्थिति बनी है, वह कांग्रेस को सबक देने के लिए काफी था, लेकिन इसके बाद भी अपनी शर्मनाक पराजय पर न तो कोई चिंतन ही किया है, और न ही उसने इस बात की जरूरत महसूस की। हां राहुल गांधी ने यह कहकर पार्टी का अध्यक्ष पद छोड़ दिया था कि अब पार्टी दूसरे किसी ऐसे व्यक्ति को अध्यक्ष बनाए जो गांधी परिवार से बाहर का हो, लेकिन यह बात ही हवाहवाई ही प्रमाणित हुई। यह ऐसे झूठ हैं जो कांग्रेस के लिए विनाशकारी साबित हो रहे हैं। राजस्थान कांग्रेस में चल रहे घमासान के कारण प्रदेश किस स्थिति में पहुंचेगी, यह शीघ्र ही पता चल जाएगा, लेकिन यह तो मानना ही होगा कि देश में कांग्रेस पार्टी के अंदर कहीं न कहीं विद्रोह करने की भावना परवान चढ़ती जा रही है। इसके लिए कांग्रेस अपनी कमियों को छिपाने के लिए भले ही भाजपा पर आरोप लगाने की राजनीति करे, लेकिन सत्य यह है कि इसके लिए कांग्रेस की कुछ नीतियां और वर्तमान में नेतृत्व की खामियां भी बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। अभी फिर से सुनाई देने लगा है कि राहुल गांधी को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने की मुहिम चल रही है। जो सीधे तौर पर जमीनी नेताओं को किनारे करने की राजनीतिक चाल है। मध्य प्रदेश के बाद अब राजस्थान में कांग्रेस सरकार के विदाई की तैयारी होने की स्थितियां निर्मित होने लगी हैं। राजस्थान में जमीनी राजनीति करने वाले सचिन पायलट बगावती स्वर मुखरित करने की मुद्रा में आ चुके हैं।

कांग्रेस की राजनीति का प्रिय शगल रहा है कि जिस नेता के हाथों में शक्ति आ जाती है, वह अपना एक नया गुट बनाने की कवायद करने में लग जाता है, साथ ही अपने लिए खतरा बन सकने वाले नेताओं को किनारे करने की भी राजनीति प्रारंभ हो जाती है। उल्लेखनीय है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया और सचिन पायलट के नाम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए भी उठ चुके हैं। यह स्वाभाविक रूप से यही संकेत करते हैं कि इन दोनों नेताओं में काबिलियत है। जिसे कांग्रेस नेतृत्व पहचानने में असमर्थ साबित हुआ है।

हमें यह भी स्मरण होगा कि कांग्रेस आलाकमान ने गत विधानसभा चुनाव में ज्योतिरादित्य सिंधिया को प्रमुख चेहरे के रूप में प्रस्तुत किया था, लेकिन बाद की राजनीति में उनको किनारे कर दिया और कमलनाथ सत्ता के शिखर पर पदासीन हो गए। इसी प्रकार की स्थिति राजस्थान में अशोक गहलोत के साथ बनी, जिसमें सचिन पायलट को किनारे किया गया। लगभग डेढ़ साल तक सचिन पायलट ने अपमान का घूंट पीकर राजनीति की। और अब परिणाम सामने हैं। बूढ़ी सोच ज्यादा दिनों तक नहीं उठाई जा सकती है, पहले मध्य प्रदेश में और अब राजस्थान में बगावत की जो सुर मुखर होकर सामने आए हैं उससे यह तो साफ हो गया है कांग्रेस में शीर्ष नेतृत्व किसी भी तरह का बदलाव नहीं चाहता है। बहरहाल राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार संकट में है और अगर वह संकट से उबर भी जाती है तो आने वाले दिनों में उसके भविष्य पर खतरा मंडराता ही रहेगा। राजस्थान में सचिन पायलट मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे, लेकिन उन्हें दरकिनार कर राज्य की कमान गांधी परिवार के पुराने दरबारी अशोक गहलोत को सौंप दी। देश की राजनीति में भाजपा के उभार और विशेषकर 2014 के बाद की राजनीतिक परिस्थितियों पर नजर डालें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अपनी ही गलतियों के कारण कांग्रेस सत्ता से हाथ धोना पड़ा। यही नहीं वह निरंतर कमजोर होती गई और जनता के बीच अपने विश्वास को भी बचाकर नहीं रख सकी। मध्य प्रदेश और राजस्थान की घटनाक्रमों से यह संदेश तो गया है कि पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र और अनुशासन पूरी तरह खत्म हो गया है। सवाल यह है कि मतदाताओं ने क्या इसी दिन को देखने के लिए राजस्थान में कांग्रेस को चुना था। ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ जो हुआ, वही राजस्थान में सचिन पायलट के साथ हुआ। संभावना यह भी है कि आने व